महम-हरियाणा। महाशिवरात्रि कार्यक्रम में एस.डी.एम. प्रदीप अहलावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला,माउण्ट आबू, ब्र.कु. रक्षा तथा ब्र.कु. चेतना।

दिल्ली-लोधी रोड। 'होली का महत्व' विषयक पब्लिक प्रोग्राम के दौरान डॉ. सुब्रमणियम स्वामी,सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गिरिजा तथा ब्र.कु. पीयूष।

कुशीनगर-उ.प्र.। पदरौना की महारानी साहिबा मोहिनी देवी जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मीरा।

श्रेष्ठ स्वमान की तपस्या

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

राजीव तुम्हारा जन्म ही महान कार्यों के लिए हुआ है, अब तुम वही करो जिसके लिए तुमने जन्म लिया है - ये प्रेरक बोल राजीव के अलबेलेपन को समाप्त कर गए। उसका चिन्तन गहन हुआ और स्वमान की अनुभूति बढ़ी। कदमों ने रफ्तार पकड़ी और वह चला दिव्य अनुभूतियों के उस प्रकाश की ओर, जहाँ जाने पर कोई वापस लौट नहीं सकता। राजीव ने अब समझा कि यूं ही इतने वर्ष उसने पुरुषार्थ की खींचातानी अनुभव की। अब उसे यह भी अहसास हुआ कि भगवान भला कठिन साधनाओं का पथ क्यों दर्शाएगा। उसने जान लिया कि सहज ही स्वमान में टिककर हम सम्पूर्णता के समीप पहुँच सकते हैं क्योंकि यह स्वमान हमारी अपनी ही निधि है, हमें किसी अन्य की उपाधियों का अनुसरण नहीं करना है।

स्वमान क्या है? यह जानना कि मैं कौनसी आत्मा हूँ। यही वह स्वमान है, जिसे भारतीय दर्शकों ने छुआ तक नहीं। सभी ऋषि यह कहकर ही कि मैं आत्मा हूँ, अपने सत्य की समाप्ति कर गए। परन्तु जब भगवान सत्य वचन सुनाने प्रस्तुत हुए तो उन्होंने आते ही याद दिलाया – तुम कौनसी आत्मा हो, तुम कितनी शक्तियों से सुसज्जित हो और तुम्हारे क्या-क्या अधिकार व महान कर्त्तव्य हैं।

अनेक रूहों ने अनेक स्वमान की बातें सुनी और सभी ने किसी न किसी सीमा तक स्वयं का वैसा ही स्वरूप भी बनाया। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि हम पूर्णत: उसको जीवन से एकीकार कर दें अर्थात् हमारा जीवन ही वही हो जाए।

सर्व प्रथम हमें उस बात को स्वीकार कर लेना होता है, जो स्वयं भगवान ने हमारे लिए कही हैं। दूसरा, उसकी कम से कम 5 बार स्मृति रखकर स्वयं के प्रति एक दृश्य भी निर्माण करना होता है। जब तक हमारा विवेक उसे स्वीकार नहीं करता, तब तक वह बात धारणा में नहीं आएगी और न ही हम उसके नशे में ही रह पाएंगे। हमें देखना है कि कहीं हमारा विवेक उस सत्य को परिवर्तित तो नहीं कर देता अर्थात् अस्वीकार तो नहीं कर देता। कई बार हम मोटे रूप से तो कई बातों को मान लेते हैं, परन्तु हमारा अन्तर्विवेक उसे अपने अन्दर प्रवेश करने नहीं देता। तो आवश्यकता इस सूक्ष्म बात की है कि हम अपने विवेक को मनवा लें कि मैं आत्मा हूँ तो सारी कठिनाइयाँ समाप्त हो जाएंगी।

उदाहरणार्थ-हमें स्वमान मिला है कि तुम पवित्रता की देवी हो। परन्तु कलियुग के तमोप्रधान वातावरण में जन्में व पले साधक गण इस स्वमान को स्वीकार करने में देर लगाते हैं। अन्तर्विवेक इन्कार करता है कि नहीं, तुम ऐसे नहीं हो, अभी तुम्हें ऐसा बनना है। यद्यपि मोटे रूप से तो दूसरी बात ही सत्य प्रतीत होती है, परन्तु यह भी सत्य है कि यदि हम भगवान द्वारा दिए गए टाइटल को स्वीकार कर लें तो इसका स्वरूप बनने में हमें देर नहीं लगेगी।

दिनों दिन हमारे स्वमान सूक्ष्म रूप लेते चलें। मैं पवित्रता की देवी हूँ - यह नशा सूक्ष्म हो अर्थात् अब हमारा यह चिन्तन व अभ्यास हो कि जबकि मैं पवित्रता की देवी हूँ तो मुझे कलियुग की, यहाँ के तामसिक मनुष्यों की, यहाँ के तमोप्रधान वायब्रेशन्स की अपवित्रता छू भी नहीं सकती। वो मुझसे टकराकर वापस हो जाएगी। जो भी मुझे देखेगा, पवित्रता की प्रेरणा ले जाएगा। मैं अपनी दृष्टि व संकल्प से सभी को पवित्रता का बल दूंगी, उनकी आसुरी वृत्तियों को नष्ट करूँगी।

एक विशेष अभ्यास

आप स्वमान के प्वाइंट्स की एक लिस्ट बनाएं। उसमें 10 या 15 प्वाइंट्स हों और योगयुक्त होकर स्वयं से यह पूछें कि इनमें से मुझे कौन-कौनसी बात बहुत प्रिय लगती है, जिसे सुनते ही मैं फ्रेश हो जाता हूँ या जिसे सुनते ही मुझे बहुत नशा चढ़ जाता है व मेरी थकान व सुस्ती भी मिट जाती है। अब आप ज़रा सोचें कि आपको यह बात क्यों अतिप्रिय है? क्या आप बताएंगे, पुन: विचार करें।

वह स्वमान की बात आपको इसलिए भाती है कि कल्प पहले आप उसी बात का स्वरूप बने थे। हमें याद रहे कि हमें जो कुछ भी प्रिय लगता है, उससे हम अनेक बार से जुड़े रहे हैं। अब यदि उसी स्वमान की प्वाइंट को लेकर आप 15 दिन सच्चे दिल से अभ्यास करें तो आपको अद्भुत अनुभव होंगे और आप उसी स्वमान का स्वरूप बन जाएंगे। इससे भी राज़युक्त तथ्य यह होगा कि प्रत्यक्षता के काल में आपकी वही स्थिति दूसरों को भी अनेक अनुभव कराएगी और भक्त आपको उसी स्वरूप में देखेंगे और भक्तिकाल में भी वही स्वमान आपकी पूज्य स्थिति का आधार बनेगा।

यहाँ कुछ स्वमानों की बातें लिख रहें हैं। आप देखें, उनमें से आपको कौनसा स्वमान अति प्रिय है -

1. मैं दाता व वरदाता हूँ।
2. मैं प्रकृति का मालिक हूँ।
3. मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ।
4. मैं साक्षात्कारमूर्त हूँ, ईष्ट देव हूँ।
5. मैं पवित्रता का अवतार हूँ।

इसके अतिरिक्त अन्य भी कुछ महत्वपूर्ण प्वाइंट्स हो सकते हैं। जैसे मैं विश्व कल्याणकारी हूँ, मैं विजयी रत्न हूँ, मैं मास्टर मुक्ति व जीवन मुक्ति दाता हूँ, मैं विघ्न-विनाशक हूँ, मैं मास्टर भाग्य विधाता हूँ आदि आदि।

समाराल-लुधियाना। शिवजयंति पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक अमरीक सिंह ढिल्लों, अकाली दल के उम्मीदवार संता सिंह उमैदपुर, ब्र.कु.राज, ब्र.कु. नीलम तथा अन्य।

नजीबाबाद-उ.प्र.। महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. गीता, अध्यक्ष सचिव रिचा बहन तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

बांदा-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए डॉ. आर.पी. गुप्ता,सी.एम.एस., उषा सिंह,एस.डी.ओ.,बी.एस.एन.एल., ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. शालिनी तथा अन्य।

चिरकुण्डा-झारखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कुलती मदद फाउण्डेशन द्वारा 'नारी सम्मान अवार्ड-2017' से सम्मानित ब्र.कु.अनिता, ब्र.कु. पिंकी तथा अन्य गणमान्य महिलायें कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।

पौड़ी गढ़वाल-उत्तराखण्ड। होली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु.ज्योति, ऑटो रिक्शा संघ के अध्यक्ष, आकाशवाणी की कार्यक्रम संयोजिका सुनिता जी, समाजसेवी सीता गुप्ता तथा ब्र.कु.शशिप्रभा।